पुणा International School

Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class-VII

Hindi

Specimen copy

Year- 2022-23

Semester- 2

कविता-11 रहीम के दोहे

- रहीम

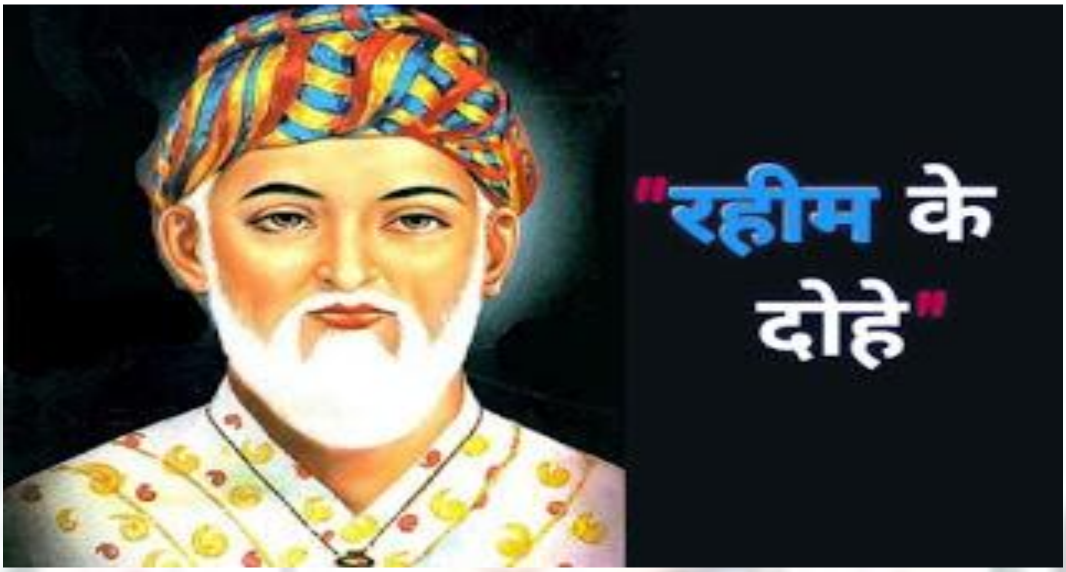

➢ दोहे का सार

1. कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत ।।1।।

प्रसंग:- रहीम दास जी के दोहे के माध्यम से सच्चे मित्र की परिभाषा को बताया है।

व्याख्या:- रहीम दास जी कहते है कि जब हमारे पास संपत्ति होती है तो लोग अपने आप हमारे सगे, रिश्तेदार और मित्र बनने की प्रयास करते है लेकिन सच्चे मित्र वो ही होते है, जो विपत्ति या विपदा आने पर भी हमारे साथ बने रहते है। वही हमारे सच्चे मित्र होते है उनका साथ हमें कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

शब्दार्थ:- कहि – कहना, **संपति –** धन, **सगे –** रिश्तेदार (अपने), **बनत –** बनते है, **रीत –** तरीका, **बिपति –** संकट (कठिनाई), **कसौटी जे कसे –** बुरे समय में जो साथ में, **तेई –** वे ही, **साँचे –** सच्चे, **मीत –** मित्र (अपने)।

---

2. जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह ।।2।।

प्रसंग:- इस दोहे में रहीम दास जी ने जल के प्रति मछली के एक तरफा प्रेम को दर्शाया है।

व्याख्या:- रहीम दास जी कहते है कि जब मछली पकड़ने के लिए जल में जाल डाला जाता है तो जल बहकर बाहर निकल जाता है। वह मछली के प्रति अपना मोह त्याग देता है लेकिन मछली का प्रेम जल के प्रति इतना अधिक होता है कि वो जल से अलग होते ही अपने प्राण त्याग देती है, यही सच्चा प्रेम है।

शब्दार्थ:- परे – पड़ने पर, **जल –** पानी, **जात-** जाता, **बहि –** बहना, **तजि –** छोड़ना, **मीनन –** मछलियाँ, **मोह –** लगाव, **मछरी – मछली**. **नीर –** जल, **तऊ –** तब भी, **न –** नहीं, **छाँड़ति –** छोड़ती, **छोह-** प्रेम (प्यार)।

3. तरूवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपति-सचहिं सुजान ।।3।।

प्रसंग:- रहीम दास जी ने इस दोहे में मनुष्य में पाए जाने वाले परोपकार की भाव को प्रकट किया है अथार्थ दूसरों की भलाई करना।
व्याख्या:- रहीम दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार वृक्ष अपने फल कभी नहीं खाता सरोवर अपने द्वारा संचित किया गया जल कभी नहीं पीता उसी प्रकार सज्जन और विद्वान लोग अपने द्वारा संग्रह किए गए धन का उपयोग अपने लिए नहीं बल्कि दूसरों की भलाई में करते है।
शब्दार्थ:- तरुवर – वृक्ष, **नहिं –** नहीं, **खात –** खाना, **सरवर –** सरोवर (तालाब), **पियत –** पीते, **पान –** पानी, **कहि –** कहते, **परकाज –** दुसरो के लिए काम, **हित –** भलाई, **सम्पति –** धन (दौलत), **सचहिं –** संग्रह (बचत), **सुजान –** सज्जन/ज्ञानी।

---

4. थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात ।।4।।
प्रसंग:- प्रेमदास जी इस दौरे के माध्यम से बताना चाहते है कि मनुष्य निर्धन होने के बाद भी पुराने दिनों के ऐश्वर्य की बातें करते रहते है।
व्याख्या:- रहीम दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार आश्विन के महीने में जो बादल आते है वो थोथे होते है। वे केवल गरजते है लेकिन बरसते नहीं है उसी प्रकार धनी पुरुष निर्धन होने पर अपने सुख में बिताए हुए दिनों की बातें करता रहता है जिसका वर्तमान में कोई मतलब नहीं होता है। वह अपने सुख में बिताए हुए पलों को याद करते रहते है लेकिन अपनी वर्तमान स्थिति में कोई सुधार नहीं करते है।
शब्दार्थ:- थोथे – खोखले. **बादर –** बादल, **क्वार –** आश्विन (सितंबर-अक्टूबर का महीना), **ज्यों-** जैसे, **घहरात –** गर्जना, **धनी –** धनवान, **निर्धन –** गरीब, **भए –** हो जाते है, **पाछिली –** पिछली (पुरानी)।

---

5. धरती की-सी रीत है, सीत घाम औ मेह।
जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह।।5।।
प्रसंग:- इस दोहे में रहीम दास जी ने मनुष्य के शरीर की तुलना धरती से की है।
व्याख्या:- रहीम दास जी कहते हैं कि जिस प्रकार हमारी धरती सर्दी, गर्मी, बरसात के मौसम को एक समान भाव से जेल लेती है। उसी प्रकार हमारे शरीर में भी वैसे ही क्षमता होनी चाहिए हम जीवन में आने वाले परिवर्तन और सुख-दुख को सहज रूप से स्वीकार कर सकें।
शब्दार्थ:- रीत- ढंग, **सीत-** सर्दी (ठंड), **घाम –** धुप, **औ-** और, **मेह-** बारिश, **परे**-पड़ना, **सो-** सारा, **सहि-** सहना, **त्यों –** वैसे, **देह-** शरीर।

- **अतिलघु उत्तरीय प्रश्न**

1-जीवन में मित्रों की अधिकता कब होती है?
उत्तर- जब जीवन में काफ़ी धन-दौलत, मान-सम्मान बढ़ जाता है तो मित्रों और शुभचिंतकों की संख्या बढ़जाती है।
2- 'जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता' इसका क्या प्रमाण है?
उत्तर- जल को मछलियों से कोई प्रेम नहीं होता। इसका यह प्रमाण है कि मछलियों के जाल में फँसते ही जल उन्हें अकेला छोड़कर आगे बह जाता है।
3-सज्जन और विद्वान के संपत्ति संचय का क्या उद्देश्य होता है?
उत्तर- सज्जन और विद्वान संपत्ति का अर्जन दूसरों की भलाई के लिए करते हैं। उनका धन हमेशा दूसरों की भलाई में खर्च होता है।
4-रहीम ने क्वार मास के बादलों को कैसा बताया है?
उत्तर- रहीमने क्वार महीने के बादलों को थोथा यानी बेकार गरजनेवाला बताया है।

- **लघुउत्तरीयप्रश्न**

1-वृक्ष और सरोवर किस प्रकार दूसरों की भलाई करते हैं?
उत्तर- वृक्ष और सरोवर अपने द्वारा संचित वस्तुका स्वयं उपयोग नहीं करते हैं, यानी वृक्ष असंख्य फल उत्पन्न करता है लेकिन वह स्वयं उसका उपयोग नहीं करता। वह फल दूसरों के लिए देते हैं। ठीक इसीप्रकार सरोवर भी अपना जल स्वयं न पीकरउसे समाज की भलाई के लिए संचित करता है।

2- रहीम मनुष्य को धरती से क्या सीख देना चाहता है?

उत्तर- रहीम मनुष्य को धरती से सीख देना चाहता है कि जैसे धरती सरदी, गरमी व बरसात सभी ऋतुओं को समान रूप से सहती है, वैसे ही मनुष्य को भी अपने जीवन में सुख-दुख को सहने की क्षमता होनी– चाहिए।

3-रहीमने क्वार के बादलों की तुलना किससे और क्यों की है?

उत्तर- रहीमने क्वार के बादलों की तुलना उन लोगों से की है जो अमीरी सेनिर्धनहोचुकेहैं। निर्धन लोग जब उन दिनों की बात करते हैं, जब वे धनी तथा सुखी थी, तोउनकीबातें पूर्णतः क्वार के बादलों की खोखली गरज जैसी होती है। क्वार बादल गरजते भर हैं, कभी बरसते नहीं, उसी प्रकार धनी लोग निर्धन होकर अपनी अमीरी की बातें करते हैं।

- **दीर्घउत्तरप्रश्न**

1- रहीम के दोहों से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर- रहीमके दोहों से हमें सीख मिलती है कि हमें अपने मित्र का सुख-दुख में बराबर साथ देना चाहिए। हमारे मन में परोपकार की भावना होनी चाहिए। जिसप्रकार प्रकृति हमारे लिए सदैव परोपकार करती है, उसीप्रकार हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए। रहीम वृक्ष और सरोवर की ही तरह संचित धनको जनकल्याण में खर्च करने की सीख देते हैं। अंतिम दोहे में रहीम हमें सीख देने का प्रयास करते हैं, कि धरती की तरह जीवन में सुख-दुख को समानरूप से सहन करने की शक्ति रखनी चाहिए।

व्याकरण

- **लोकोक्तियाँ**

लोक अर्थात् सामान्य जन द्वारा कही गई उक्ति लोकोक्ति कहलाती है। लोकोक्ति का शाब्दिक अर्थ है-लोक प्रसिद्ध उक्ति या कथन। इसे 'कहावत' भी कहते हैं। ये स्वतंत्र वाक्य होते हैं।

1- अक्ल बड़ी या भैंस (काम बुद्धि से होता है, ताकत से नहीं) –
एक पहलवान इस समस्या को हल नहीं कर सका, परंतु उस कमज़ोर व्यक्ति ने कितनी आसानी से हल कर दिया।

2- अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत (समय गुज़रने पर पछताना व्यर्थ है) –
रेखा फेल होने पर बहुत पछताई कि यदि मेहनत कर लेती तो अवश्य पास हो जाती। पर अब पछताए होत क्या जब चिड़ियाँ चुग गई खेत ।

3- अंधों में काना राजा (मूर्खा में थोड़ा ज्ञानी) –
पूरे गाँव में मदन ही थोड़ा पढ़ा लिखा है, बस वही अंधों में काना राजा है।

4- आँख का अंधा नाम नयन सुख (अर्थ के विपरीत नाम) –
उसका नाम तो है भोला लेकिन वह बड़े-बड़ों का कान काटता है। इसलिए कहा गया है – आँख का अंधा नाम नयन सुख।

5- उलटा चोर कोतवाल को डाँटे (स्वयं अपराध करके दूसरों पर दोष मढ़ना) –
मेरी किताब गंदी करने पर राम मुझे ही डाँटने लगा। मैंने, कहा उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।

6- ऊँची दुकान फीका पकवान (ऊपरी दिखावा) –
शो केस में रजत की दुकान में बड़े सुंदर सामान लगे हुए हैं, मगर अंदर सभी डुप्लीकेट माल भरा है। है न ऊँची दुकान फीका पकवान वाली बात।।

7- अंत भला तो सब भला (जिस काम का परिणाम अच्छा हो, वही ठीक है।) –
मेरी नौकरी तो छोटी-सी थी, अब तरक्की हो जाने पर सब ठीक हो गया, क्योंकि कहावत भी है कि अंत भला तो सब भला।।

8- साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे (आसानी से काम हो जाना) –
ठेके और जमींदार के झगड़े में पंच को ऐसा फैसला सुनाना चाहिए कि साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

9- एक पंथ दो काज (एक काम से दोहरा लाभ) –
मुझे दफ्तर के काम से लखनऊ जाना है, वहाँ भाई साहब से भी मिलता जाऊँगा। एक पंथ दो काज हो जाएँगे।

10- अंधी पीसे कुत्ता खाय (मेहनत कोई करे लाभ किसी और को मिले) –
सुभाष की कमाई उसका बेटा जुए में उड़ा देता है। इसे कहते हैं अंधी पीसे कुत्ता खाए।

लेखन-विभाग

- **दशहरा पर अनुच्छेद**

भारत के चार सबसे बड़े त्यौहारों में से एक त्यौहार दशहरा है । हिन्दू यह त्यौहार लका के राक्षस राजा रावण पर श्रीरामचन्द्र की विजय के उपलक्ष में मनाते हैं । यह आषाढ़ मास के द्वितीय पक्ष की दसवीं तिथि को पड़ता है । यह त्यौहार दस दिन तक मनाया जाता है ।कुछ अन्य का मत है कि यह त्यौहार मनाने से लोगों के दरन प्रकार के पाप मिट जाते हैं ।अन्य बहुतसे लोगो का - क्षस राजा रावण पर श्रीराम की विजय । बंगाल में इसे दुर्गा पूजा के रूप में कहना है कि इसका अर्थ है लका के दस सिर वाले रा मनाया जाता है । साधारणतया इसे श्रीरामचन्द्र जी की लका पर विजय की याद में मनाते हैं ।सारे देश में यह त्यौहार बडे हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है । दस दिन तक रामायण की कथा एक ड्रामे के रूप में खेली जाती है, जिसे रामलीला कहते हैं । इसमें श्रीराम के समरस जीवन की झाकियां प्रस्तुत की जाती हैं । सभी बड़ेछोटे शहरों और कस्बों में बडे और खुले - मैदान में यह लीला खेली जाती है ।आमतौर पर यह मैदान रामलीला मैदान कहलाता है । यह शहर के सभी प्रसिद्ध मार्गों से होकर रामलीला मैदान पर समाप्त होता है ।बच्चे नएबिरगे कपड़े पहनते है-नए रंग-|कहींकहीं बहनें अपने भाइयों की - मंगलकामना करके उन्हें रोली का तिलक लगाती है ।भाई अपनी बहनों को यथाशक्ति धन देते हैं । घर-घर में खाने की अच्छी- रा हिन्दुओं का प्रमुख त्यौहार है । इससे भारत के प्राचीन गौरव का पता लगता है । इससे हमें अच्छी चीजे बनाई जाती हैं ।दशह सबक भी मिलता है । यह त्यौहार इस बात कोसिद्ध करता है कि बुराई पर सदैव ही अच्छाई की विजय होती है । रामलीला में दिखाए गए दृश्यों से हमें श्रीराम के गुणों को अपनाने की प्रेरणा मिलती है ।इस त्यौहार में सभी छोटेबड़े समान रूप से हिस्सा - लेते हैं इसलिए हिन्दुओं के विभिन्न वर्गों के बीच एकता कायम होती है । रामायण की चौपाइयो के पाठ से लोगों के मन का धर्म के प्रति लगाव होता है ।प्राचीन काल में दशहरे को एक राष्ट्रीय त्यौहार माना जाता था । आज भी यह किसीकिसी रूप में -न- पूजा -समूचे भारत में मनाया जाता है । बंगालियों के लिए यह वर्ष का सबसे बड़ा त्यौहार होता है । वे बड़े विशाल पैमाने पर दुर्गा मनातेहै । दशहरे के दिनों में स्कूलों में कई दिन छुट्टी रहती है । इस तरह सभी बड़ेबूढे-, बच्चे, पुराष और स्त्रियाँ इस त्यौहार को हर्षोल्लास से मनाते हैं ।

- **गतिविधि – रहीम जी का चित्र बनाए |**

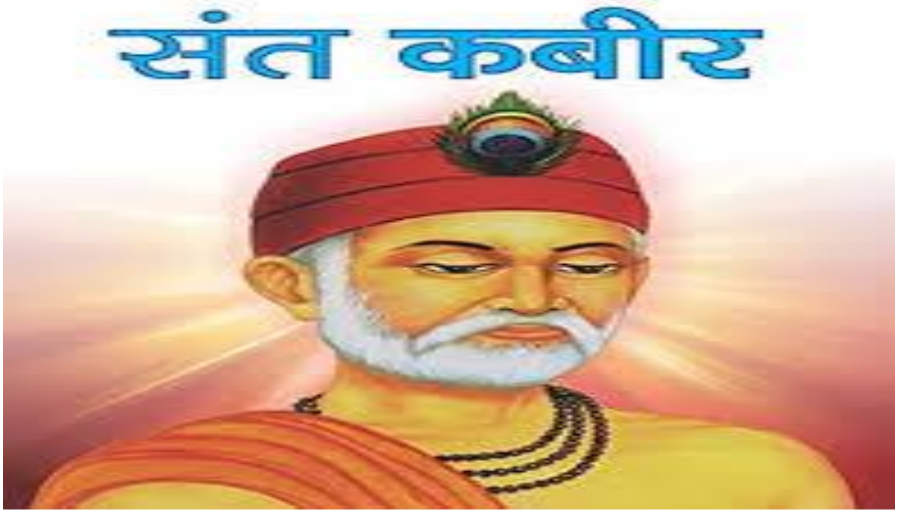

बाल- महाभारत

प्रश्न-1 मत्स्य देश के अधीश कौन थे?
उत्तर - मत्स्य देश के अधीश राजा विराट हैं।
प्रश्न-2 पांडवों ने तेरहवाँ बरस किस नगर में बिताया?
उत्तर – पांडवों ने तेरहवाँ बरस विराट नगर में बिताया।
प्रश्न-3 यक्ष ने युधिष्ठिर को क्या वर दिया?
उत्तर- यक्ष ने युधिष्ठिर को वर दिया कि उसके चारों भाई जीवित हो जाएँ।
प्रश्न-4 यक्ष की बात सुनकर युधिष्ठिर ने क्या किया?
उत्तर- यक्ष की बात सुनकर युधिष्ठिर ने उसकी बात मान ली और बोले–"आप प्रश्न कर सकते हैं।"
प्रश्न-5 यक्ष के कहने पर युधिष्ठिर ने अपने किस भाई को जीवित करने को कहा?
उत्तर – यक्ष के कहने पर युधिष्ठिर ने अपने छोटा भाई नकुल को जीवित करने को कहा।
प्रश्न-6 युधिष्ठिर के उत्तर से प्रसन्न हो कर यक्ष ने क्या कहा?
उत्तर-युधिष्ठिर के उत्तर से प्रसन्न हो कर यक्ष बोला
"राजन्! मैं तुम्हारे मृत भाइयों में से एक को जीवित कर सकता हूँ। तुम जिस किसी को भी चाहो, वह जीवित हो जाएगा।"
प्रश्न-7 वनवास के दौरान पांडवों को क्या-क्या प्राप्त हुआ?
उत्तर- वनवास के दौरान अर्जुन ने इंद्रदेव से दिव्यास्त्र प्राप्त किया, भीमसेन ने हनुमान से भेंट की और उनका आलिंगन प्राप्त करके दस गुना अधिक शक्तिशाली हो गया और युधिष्ठिर ने स्वयं धर्मदेव के दर्शन किए।

अज्ञातवास

प्रश्न / उत्तर
प्रश्न-1 राजकुमार उत्तर ने बृहन्नला से क्या कहा?
उत्तरराजकुमार उत्तर ने बृहन्नला से कहा"बृहन्नला, मुझे बचाओ इस संकट से! मैं तुम्हारा बड़ा उपकार मानूँगा ।
प्रश्न-2 दुर्योधन को कैसे पता चला कि पांडव मत्स्य देश में छिपे हैं?
उत्तर – हस्तिनापुर में कीचक के मारे जाने की खबर से दुर्योधन ने अनुमान लगाया कि पांडव मत्स्य देश में ही छिपे हैं और हो-न-हो कीचक का वध भीम ने ही किया होगा।
प्रश्न-3 सुशर्मा कौन थे और वह दुर्योधन का साथ क्यों देना चाहते थे?
उत्तर- सुशर्मा त्रिगर्त देश के राजा थे। वह दुर्योधन का साथ इसलिए देना चाहते थे क्योंकि मत्स्य देश के राजा विराट उसके शत्रु थे और इस अवसर का लाभ उठाकर वह उससे अपना पुराना बैर चुकाना चाहते थे।

प्रतिज्ञा पूर्ति

प्रश्न / उत्तर
प्रश्न-1 शंख की ध्वनि को सुनकर द्रोण ने क्या शंका व्यक्त की?
उत्तर- द्रोण ने कहा-"मालूम होता है, यह तो अर्जुन ही आया है।"
प्रश्न-2 दुर्योधन ने पितामह भीष्म को संधि के संबंध में क्या कहा?
उत्तर- दुर्योधन ने कहा"पूज्य पितामह! मैं संधि नहीं चाहता हूँ। राज्य तो दूर रहा, मैं तो एक गाँव तक पांडवों को देने के लिए तैयार नहीं हूँ ।"
प्रश्न-3 किसने किससे कहा?
"कर्ण! मूर्खता की बातें न करो। हम सबको एक साथ मिलकर अर्जुन का मुकाबला करना होगा।" कृपाचार्य ने कर्ण से कहा ।

विराट का भ्रम

प्रश्न / उत्तर
प्रश्न-1 राजकुमार उत्तर को अर्जुन से कंक के बारे में क्या मालूम हो चुका था?
उत्तर – राजकुमार उत्तर को अर्जुन से मालूम हो चुका था कि कंक तो असल में युधिष्ठिर ही हैं।
प्रश्न-2 राजकुमार उत्तर के बारे में राजा विराट को क्या भ्रम हुआ?
उत्तर – राजकुमार उत्तर के बारे में राजा विराट को भ्रम हुआ कि विख्यात कौरव-वीरों को उनके बेटे ने अकेले

ही लड़कर जीत लिया!

प्रश्न-3 कंक के मुख से खून बहता देखकर राजकुमार उत्तर क्यों चकित रह गया?

उत्तर - कंक के मुख से खून बहता देखकर राजकुमार उत्तर चकित रह गया क्योंकि उसे अर्जुन से मालूम हो चुका था कि कंक तो असल में युधिष्ठिर ही हैं।

प्रश्न-4 अंत:पुर में राजकुमार उत्तर को न पाकर जब राजा ने पूछताछ की तो उन्हें क्या पता चला?

उत्तर- अंत:पुर में राजकुमार उत्तर को न पाकर राजा ने पूछताछ की तो स्त्रियों ने बड़े उत्साह के साथ बताया कि कुमार कौरवों से लड़ने गए हैं।

प्रश्न-5 राजा विराट को शोकातुर होते देखकर कंक ने उन्हें दिलासा देते हुए क्या कहा?

उत्तर- राजा को इस प्रकार शोकातुर होते देखकर कंक ने उन्हें दिलासा देते हुए कहा" आप राजकुमार की चिंता न करें। बृहन्नला सारथी बनकर उनके साथ गई हुई है।"

प्रश्न-6 पुत्र की विजय हुई, यह जानकर विराट को कैसा लगा?

उत्तर - पुत्र की विजय हुई, यह जानकर विराट, आनंद और अभिमान के मारे फूले न समाए। उन्होंने दूतों को असंख्य रत्न एवं धन पुरस्कार के रूप में देकर खूब आनंद मनाया।

पाठ-12 कंचा

- टीपद्मनाभन .

- **पाठ का सार**

इस कहानी में लेखक ने बच्चों के मनोविज्ञान का सटीक चित्रण किया है। इस कहानी का मुख्य पात्र अप्पू नाम का एक लड़का है। उसकी उम्र के अधिकतर बच्चों की तरह अप्पू को पढ़ाई की जगह खेलकूद में अधिक मन लगता है। वह जब दुकान पर कंचों से भरी जार को देखता है तो वह कंचों की दुनिया में खो जाता है। वह अपने सपने में कंचों से भरे जार में गोते लगाता है। जब वह स्कूल पहुँचता है तो पाठ के स्थान पर उसका मन कंचों में ही उलझा रहता है। इस बात के लिए उसे सजा भी मिलती है फिर भी वह अपने सपनों की दुनिया से बाहर नहीं निकल पाता है। उसे फीस देने के लिए जो पैसे मिले थे उन सारे पैसों से वह कंचे खरीद लेता है। दुकानदार उसकी नादानी देखकर हँस पड़ता है। फिर जब वह बिखरे हुए कंचों को सड़क पर से समेट रहा होता है तो एक कार का ड्राइवर भी उसे देखकर हँसता है। घर लौटने पर उसकी माँ उसपर नाराज तो होती है लेकिन अपना गुस्सा जाहिर नहीं करती है।

➢ अतिलघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 अप्पू के स्कूल के रास्ते में कौन सा पेड़ पड़ता था?
उत्तर – अप्पू के स्कूल के रास्ते में नीम का पेड़ पड़ता था।
प्रश्न-2 अप्पू को कंचे का आकार कैसा लग रहा था?
उत्तर – अप्पू को कंचे का आकार आँवले जैसा लग रहा था।
प्रश्न-3 अप्पू ने कितने पैसे के कंचे ख़रीदे?
उत्तर - अप्पू ने एक रुपया और पचास पैसे के कंचे ख़रीदे।
प्रश्न-4 अप्पू का सारा ध्यान कौन सी कहानी पर केंद्रित था?
उत्तर – अप्पू का सारा ध्यान "कौए और सियार" की कहानी पर केंद्रित था।
प्रश्न-5 अप्पू को उसके पिता ने पैसे क्यों दिए थे?
उत्तर - अप्पू को उसके पिता ने पैसे स्कूल की फ़ीस के लिए दिए थे।
प्रश्न-6 क्या सुनकर अप्पू कंचे बिना लिए स्कूल की तरफ दौड़ पड़ा?
उत्तर – स्कूल की घंटी सुनकर अप्पू कंचे बिना लिए स्कूल की तरफ दौड़ पड़ा।
प्रश्न-7 कंचे कैसे थे?
उत्तर - सफ़ेद गोल कंचे थे। उसमें हरी लकीरें थी। वह बड़े आँवले के जैसे थे और बहुत खूबसूरत थे।

➢ लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1अप्पू द्वारा एक रुपया और पचास पैसे के कंचे माँगने पर दुकानदार क्यों चौंक गया?
उत्तर - अप्पू द्वारा एक रुपया और पचास पैसे के कंचे माँगने पर दुकानदार इसलिए चौंक गया क्योंकि पहले कभी किसी लड़के ने ने इतनी बड़ी रकम से कंचे नहीं खरीदे थे।
प्रश्न-2 दुकान में कंचे देखकर अप्पू की क्या प्रतिक्रिया हुई?
उत्तर – वह कंधे से लटकते बस्ते का फीता एक तरफ़ हटाकर, उस कंचे वाले जार के सामने खड़ा होकर टुकर - टुकर ताकता रहा और सोचने लगा की शायद दुकानदार ने इसे नया - नया लाकर कर रखा है।
प्रश्न-3 पाठ में बार - बार अप्पू जॉर्ज की ही बातें क्यों कर रहा था?
उत्तर - जॉर्ज अप्पू का सहपाठी था। जॉर्ज सभी बच्चों में कंचे का सबसे अच्छा खिलाड़ी था। जॉर्ज से बड़े – बड़े लड़के भी हार जाते थे। अप्पू पर भी कंचों का जादू छाया हुआ था। यही कारण था की पाठ में बार - बार अप्पू जॉर्ज की बार अप्पू जॉर्ज की ही बातें कर रहा था।
प्रश्न-4 अप्पू द्वारा एक रुपया और पचास पैसे के कंचे खरीदने पर दुकानदार ने क्या सोचा?
उत्तर – अप्पू द्वारा एक रुपया और पचास पैसे के कंचे खरीदने पर दुकानदार ने अनुमान लगाया कि उसके साथी मिलकर यह कंचे खरीद रहे होंगे और अप्पू ही उनके लिए खरीदने आया होगा।

➢ दीर्घ प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 कहानी में अप्पूने बार-बार जॉर्ज को याद किया है? इसका क्या कारण था?
उत्तर- जॉर्ज कंचे का अच्छा खिलाड़ी है। वह अप्पू का सहपाठी था। चाहे कितना भी बड़ा लड़का उसके साथ कंचाखेले, उससे वह हार जाएगा। हारे हुए खिलाड़ी को अपनी बंद मुट्ठी जमीन पर रखनी पड़ती थी। तब जॉर्ज कंचा चलाकर बंदमुट्ठी के जोड़ों की हड्डी तोड़ता है। अप्पू सोचता है कि जॉर्ज के आते ही वह उसे लेकर कंचे खरीदने जाएगा और उसके साथ खेलेगा अप्पू की इस सोच के पीछे शायद यह कारण था कि जॉर्ज के साथ रहने से उसे हार का सामना नहीं करना पडेगा। इतना ही नहीं, वह सोचता है कि जॉर्ज के साथ रहने पर कक्षा में उसका कोई हँसी नहीं उड़ाएगा। इसके अलावे वह जॉर्जके अतिरिक्त किसी को खेलने नहीं देगा।

व्याकरण

- **मुहावरे**

जो वाक्यांश अपने सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को प्रकट करता है, वह मुहावरा कहलाता है।

1- आँख का तारा (बहुत प्यारा) – ओजस्व अपने माता-पिता की आँखों का तारा है।
2- आकाश-पाताल एक करना (बहुत अधिक प्रयत्न करना) –
   प्रणव ने आई०ए०एस० की परीक्षा में सफलता पाने के लिए आकाश-पाताल एक कर दिया।
3- अंधे की लकड़ी (असहाय व्यक्ति का एकमात्र सहारा) –
   श्रवण कुमार अपने माता-पिता की अंधे की लकड़ी थे।
4- आग-बबूला होना (अतिक्रोधित होना) – पेड़ काटे जाने की खबर सुनकर आग-बबूला हो गए।
5- मुँह में पानी आना (लालच पैदा होना) – रसगुल्लों को देखकर मेरे मुँह में पानी भर आता है।
6- हवा से बातें करना (बहुत तेज़ दौड़ना) – बाबा भारती का घोड़ा हवा से बातें करता था।
7- अगर-मगर करना (टाल-मटोल करना) – माँ ने आयुष से पढ़ने के लिए कहा तो वह अगर-मगर करने लगा।
8- काम तमाम करना (मार डालना) – शेर ने कुछ ही पलों में हिरन का काम तमाम कर दिया।
9- बाट देखना (प्रतीक्षा करना) – हम सब मुख्य अतिथि की बाट देख रहे हैं।
10- दिल दुखाना (कष्ट देना) – हमें कभी भी अपनों का दिल नहीं दुखाना चाहिए।
11- बाल बाँका न होना (जरा भी नुकसान न होना) – इतनी बड़ी दुर्घटना के बाद भी चालक का बाल भी बाँका न हुआ।

लेखन -विभाग

माँबेटे के बीच संवाद-
बेटा- माँ, ओ माँ !
माँ- अरे, आ गए बेटा !
बेटा- हाँ माँ । ....
माँ- आज स्कूल से आने में काफी देर लगा दी। ....
बेटा- हाँ माँ, आज विश्व पर्यावरणदिवस जो था।-
माँ- तो क्या कोई विशेष कार्यक्रम था तेरे स्कूल में ?
बेटा- हाँ माँ, आज हमारे स्कूल में 'तरुमित्रा' के फादर आए हुए थे।
माँ- तब तो जरूर उन्होंने पेड़पौधों के बारे में विशे-ष जानकारी दी होगी।
बेटा- हाँ, उन्होंने जानकारी भी दी और हम छात्रों के हाथों पौधे भी लगवाए।
माँ- तुमने कौन सा पौधा लगाया-?
बेटा- मैंने अर्जुन का पौधा लगाया, माँ।
माँ- बहुत खूब।
बेटा- जानती हो माँ, शिक्षक बता रहे थे कि यह पौधा हृदयरोग में काम आता है।-
माँ- वह कैसे ?
बेटा- इसकी छाल और पत्ते से हृदयरोग की दवा बनती है।-
माँ- पेड़ पौधों के बारे में शिक्षक ने और क्याक्या बताया-?
बेटा- उन्होंने कहा कि पेड़पास लगाने चाहिए।-ण को संतुलित रखते हैं। वे हमें ऑक्सीजन देते हैं। इन्हें अपने आसपौधे पर्यावर-
माँ- अच्छा, अब मेरा राजा बेटा, हाथपाँव धोकर भोजन करेगा।-
बेटा- ठीक है, माँ।

- **गतिविधि – अप्पू का चित्र बनाए |**

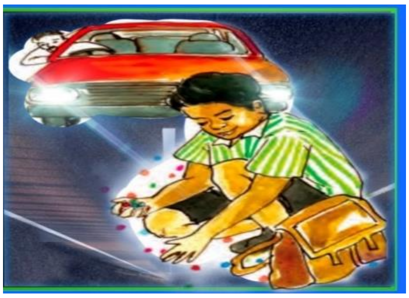

विता -13 एक तिनका
- अयोध्या सिंह उपाध्याय " हरिऔध

- **एक तिनका कविता का सारांश-**

एक तिनका कविता में कवि हरिऔध जी ने हमें घमंड ना करने की प्रेरणा दी है। इस कविता के अनुसार, एक दिन वो बड़े घमंड के साथ अपने घर की मुंडेर पर खड़े होते हैं, तभी उनकी आँख में एक तिनका गिर जाता है। उन्हें बड़ी तकलीफ होती है और जैसे-तैसे तिनका उनकी आँख से निकल जाता है। तिनके के निकलने के साथ ही कवि के मन से घमंड भी निकल जाता है और उन्हें सरल जीवन जीने का महत्व समझ आ जाता है।

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न-1 तिनका कहाँ से उड़ कर आया था?
उत्तर – तिनका बहुत दूर से उड़ कर आया था।
प्रश्न-2 तिनका कहाँ आ गिरा?
उत्तर - तिनका कवि की आँख में आ गिरा।
प्रश्न-3 कवि पर किसने व्यंग किया?
उत्तर – कवि पर समझ ने व्यंग किया।
प्रश्न-4 कवि घमंड में ऐंठा हुआ कहाँ खड़ा था?
उत्तर - कवि घमंड में ऐंठा हुआ मुंडेर पर खड़ा था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

- **प्रश्न-1 आँख में तिनका पड़ने के बाद घमंडी की क्या दशा हुई?**
उत्तर – घमंडी की आँख में तिनका जैसे ही गया वह बहुत बेचैन हो गया। उसकी आँख लाल हो गई और दुखने लगी। वो दर्द से कराह रहा था पर कुछ कर नहीं पा रहा था।
प्रश्न-2 तिनकेवाली घटना से कवि को क्या शिक्षा मिली?
उत्तर तिनकेवाली घटना से कवि को यह शिक्षा मिली कि मनुष्य को कभी भी घमंड नहीं करना चाहिए। एक छोटा तिनका भी कष्ट का कारण बन सकता है और हमारे घमंड को चूर कर सकता है।
प्रश्न-3 कवि की सारी अकड़ क्यों भाग गई?
उत्तर – कवि की सारी अकड़ आँख में तिनका गिरने से भाग गई। उसे घमंड था कि उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़

सकता परन्तु एक तिनके ने उसकी हालत बुरी कर दी और उसे तिनका निकालने के लिए दूसरों की मदद लेनी पड़ी।

व्याकरण

- **वाक्य अशुद्धियाँ एवं संशोधन**

वाक्य लिखते अथवा बोलते समय अकसर कई प्रकार की अशुद्धियाँ होती हैं। सामान्यतः ये अशुधियाँ उच्चारण की अशुद्धियों के कारण होते हैं।

1- मैं आपकी पुस्तक नहीं लीं।।
- मैंने आपकी पुस्तक नहीं ली।

2- मेरे को घूमना बहुत अच्छा लगता है।
- मुझे घूमना बहुत अच्छा लगता है।

3- विद्यालय रविवार के दिन बंद होते हैं।
- विद्यालय रविवार को बंद होते हैं।

4- तैने उसको क्या दिया?
- तुमने उसे क्या दिया?

5- कार्तिक मेरा बालक है।
- कार्तिक मेरा पुत्र है।

6- रावण बहुत ज्ञानी व्यक्ति था।
- रावण बहुत ज्ञानी थी।

7-हमारी कक्षा में चालीस छात्र है।
- हमारी कक्षा में चालीस छात्र हैं।

8- हमें गरीब की मदद करनी चाहिए।
- हमें गरीबों की मदद करनी चाहिए।

9- वह नौकरी पा गया।
- उसे नौकरी मिल गई।

10- आप यह कंबल पहन लें।
- आप यह कंबल ओढ़ लें।

11- उसका प्राण निकल रहा है।
- उसके प्राण निकल रहे हैं।

लेखन -विभाग

दिए गए चित्रों को देखकर 20-30 शब्दों में उनका वर्णन कीजिए।

प्रस्तुत चित्र मंदिर का है। मंदिर एक ऐसा स्थान है, जहाँ व्यक्ति श्रद्धाभाव से जाता है और अपने इष्टदेव की पूजा करके मानसिक शांति पाता है। अतः प्रातः काल सभी लोग मंदिर जाते हैं। इस चित्र में एक महिला हाथ में पूजा की थाली लिए मंदिर जा रही है। हिंदू धर्म में वृक्ष की पूजा का विधान है इसलिए प्रत्येक मंदिर के बाहर पीपल या केला का पेड़ एवं तुलसी का पौधा होता है। इस चित्र में भी एक वृक्ष है जिसके सामने खड़े होकर एक महिला पूजा कर रही है। एक बच्चा पूजा के लिए जाती हुई महिला से भिक्षा माँग रहा है उसके एक हाथ में पात्र है और उसने दूसरा हाथ भिक्षा के लिए फैला रखा है। सीढ़ियों के पास एक बच्चा बैठा है, जो कि अपाहिज है। वह मंदिर में आने वाले भक्तों से दया की भीख चाहता है।

- **गतिविधि–एक तिनका कविता का चित्र बनाए |**

बाल- महाभारत

मत्रणा

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न-1 अभिमन्यु का विवाह किसके साथ किया गया?

उत्तर- अभिमन्यु का विवाह उत्तरा के साथ किया गया।

प्रश्न-2 दुर्योधन और अर्जुन किस कारण श्रीकृष्ण के पास गए थे?

उत्तर - दुर्योधन और अर्जुन दोनों ही श्रीकृष्ण के पास उनसे प्रार्थना करने गए थे कि वो उनकी युद्ध में सहायता करें।

प्रश्न-3 तेरहवाँ बरस पूरा होने पर पांडव कहाँ जाकर रहने लगे?

उत्तर – तेरहवाँ बरस पूरा होने पर पांडव विराट की राजधानी छोड़कर विराटराज के ही राज्य में स्थित 'उपप्लव्य' नामक नगर में जाकर रहने लगे।

प्रश्न-4 श्रीकृष्ण किन लोगों को लेकर उपप्लव्य जा पहुँचे?

उत्तर – भाई बलराम, अर्जुन की पत्नी सुभद्रा तथा पुत्र अभिमन्यु और यदुवंश के कई वीरों को लेकर श्रीकृष्ण उपप्लव्य जा पहुँचे।

प्रश्न-5 श्रीकृष्ण की नींद खुली तो उन्होंने पहले सामने किसे देखा और क्यों?

उत्तर- श्रीकृष्ण की नींद खुली तो उन्होंने पहले सामने अर्जुन को देखा क्योंकि दुर्योधन श्रीकृष्ण के सिरहाने एक ऊचे आसन पर बैठा था और अर्जुन श्रीकृष्ण के पैताने ही हाथ जोड़े खड़े थे ।

प्रश्न-6 यदुकुल का वीर और पांडवों का हितैषी सात्यकि आगबबूला क्यों हो उठा?

उत्तर- बलराम के कहने का सार यह था कि युधिष्ठिर ने जान-बूझकर अपनी इच्छा से जुआ खेलकर राज्य गंवाया था। उनकी इन बातों से यदुकुल का वीर और पांडवों का हितैषी सात्यकि आगबबूला हो उठा।

प्रश्न-7 श्रीकृष्ण से मिलने के बाद दुर्योधन किस बात के लिए आनंदित हो रहा था?

उत्तर-

श्रीकृष्ण से मिलने के बाद दुर्योधन आनंदित हो रहा था क्योंकि उसे लगा कि अर्जुन ने खूब धोखा खाया और श्रीकृष्ण की वह लाखों वीरोंवाली भारी-भरकम सेना सहज में ही उसके हाथ आ गई।

राजदूत संजय

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न-1 भीष्म ने युधिष्ठिर के संधि प्रस्ताव को सुनकर क्या सलाह दी?

उत्तर - भीष्म ने सलाह दी कि पांडवों को उनका राज्य वापस देना ही न्यायोचित होगा।

प्रश्न-2 संधि प्रस्ताव के विषय में अंत में धृतराष्ट्र ने क्या निश्चय किया?

उत्तर- सारे संसार की भलाई को ध्यान में रखकर धृतराष्ट्र ने अपनी तरफ़ से संजय को दूत बनाकर पांडवों के पास भेजने का निश्चय किया।

प्रश्न-3 युधिष्ठिर ने संजय द्वारा धृतराष्ट्र को क्या संदेश भेजा?

उत्तर- युधिष्ठिर ने संजय द्वारा धृतराष्ट्र को संदेश भेजा कि "कम-सेकम हमें पाँच गाँव ही दे दें। हम पाँचों भाई इसी से संतोष कर लेंगे और संधि करने को तैयार होंगे।"

प्रश्न-4 धृतराष्ट्र ने दुर्योधन को संधि के विषय में क्या समझाया?

उत्तर- धृतराष्ट्र ने संतप्त होकर दुर्योधन को समझाया-"बेटा, भीष्म पितामह जो कहते हैं, वही करने योग्य है। युद्ध न होने दो। संधि करना ही उचित है।"

प्रश्न-5 श्रीकृष्ण स्वयं हस्तिनापुर क्यों जाना चाहते थे?
उत्तर – श्रीकृष्ण स्वयं हस्तिनापुर जाकर शांति स्थापित करने का प्रयास करना चाहते थे जिससे कि किसी के यह कहने की गुंजाइश ही न रहे कि उन्होंने शांति स्थापित करने का प्रयास नहीं किया।

शांतिदूत श्रीकृष्ण
प्रश्न / उत्तर
प्रश्न-1 पहले श्रीकृष्ण किसके भवन में गए?
उत्तर – पहले श्रीकृष्ण धृतराष्ट्र के भवन में गए।
प्रश्न-2 श्रीकृष्ण हस्तिनापुर किस उद्देश्य से गए?
उत्तर - शांति की बातचीत करने के उद्देश्य से श्रीकृष्ण हस्तिनापुर गए।
प्रश्न-3 धृतराष्ट्र से मिलने के बाद श्रीकृष्ण किससे मिलने गए?
उत्तर – धृतराष्ट्र से विदा लेकर श्रीकृष्ण विदुर के भवन में गए। कुंती वहीं कृष्ण की प्रतीक्षा में बैठी थी।
प्रश्न-4 श्रीकृष्ण को ठहराने का प्रबंध कहाँ किया गया और क्यों?
उत्तर- दुःशासन का भवन दुर्योधन के भवन से अधिक ऊँचा और सुंदर था। इसलिए धृतराष्ट्र ने आज्ञा दी कि उसी भवन में श्रीकृष्ण को ठहराने का प्रबंध किया जाए।
प्रश्न-5 दुर्योधन ने जब श्रीकृष्ण को भोजन का न्यौता दिया तो उन्होंने क्या कहा?
उत्तर- दुर्योधन ने श्रीकृष्ण का शानदार स्वागत किया और उचित आदरसत्कार करके भोजन का न्यौता दिया तब श्रीकृष्ण ने कहा- "राजन्! जिस उद्देश्य को लेकर मैं यहाँ आया हूँ वह पूरा हो जाए, तब मुझे भोजन का न्यौता देना उचित होगा।"
प्रश्न-6 कर्ण रोज संध्या-वंदन कहाँ किया करता था?
उत्तर- कर्ण गंगा के किनारे रोज संध्या-वंदन किया करता था।
प्रश्न-7 कर्ण की बातें सुनकर कुंती की क्या दशा हुई?
उत्तर – कर्ण की सारी बातें सुनकर माता कुंती का मन बहुत विचलित हुआ, परंतु उन्होंने उसे अपने गले से लगा लिया और आशीर्वाद देकर कुंती अपने महल में चली आई।
प्रश्न-8 धृतराष्ट्र ने गांधारी को सभा में लाने को क्यों कहा?
उत्तर – धृतराष्ट्र ने गांधारी को सभा में लाने को इसलिए कहा क्योंकि धृतराष्ट्र जानते थे कि गांधारी समझ बहुत स्पष्ट है और वह दूर की सोच सकती है। हो सकता है, उसकी बातें दुर्योधन मान ले।

कविता-16 भोर और बरखा
- मीराबाई

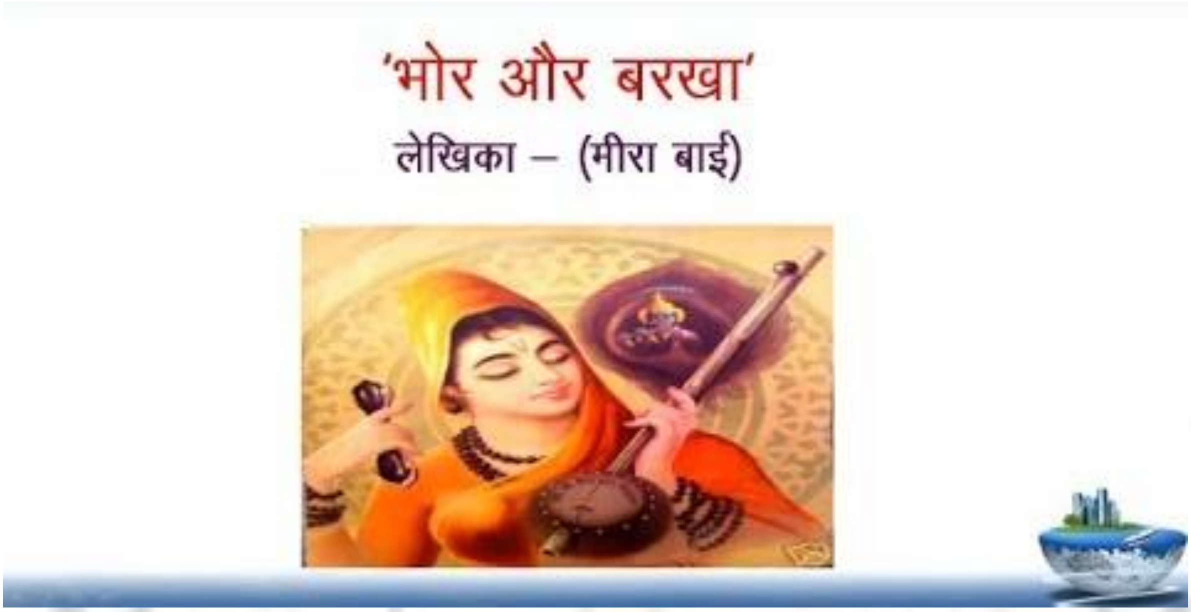

➤ कविता का सार

इस कविता में मीरा ने सुबह का वर्णन किया है जब यशोदा मैया कृष्ण को जगाने की कोशिश कर रही हैं। यशोदा कह रही हैं कि रात बीत चुकी है, सुबह हो गई है और घर-घर के दरवाजे खुल चुके हैं। गोपियाँ दही मथने लगी हैं जिसके कारण उनकी चूड़ियों की झनकार सुनाई दे रही है। वह फिर कहती हैं कि दरवाजे पर सुर और नर खड़े हैं, और कृष्ण के ग्वाल-बाल मित्र जय-जय करते हुए कोलाहल कर रहे हैं। ग्वाले गायों को चराने जाने की तैयारी में अपने-अपने हाथों में मक्खन-रोटी ले चुके हैं। मीरा कहती हैं कि भगवान कृष्ण अपने शरण में आने वाले हर किसी पर उपकार करते हैं।इस कविता में मीरा ने वर्षा ऋतु का वर्णन किया है। सावन में जब बादलों से बारिश होने लगती है तो मौसम सुहाना हो जाता है। सावन के आते ही मीरा के मन में उमंग उठने लगते हैं जैसा कि कृष्ण के आने की सूचना से होता है। बादल चारों दिशाओं से उमड़-घुमड़ कर आते हैं और बिजली चमक चमक कर बारिश के आने की सूचना देती है। ऐसे में रिमझिम बारिश होने लगती है और सुहानी ठंडी हवा चलने लगती है। ऐसे में मीरा का मन होता है कि अपने प्रभु की आराधना में मंगल गान शुरु कर दें।

➤ नए शब्द

1) ललना
2) किंवारे
3) मथत
4) गउवन
5) तारै
6) चहूँदिस
7) झर

➤ शब्दार्थ

1) ललना= पुत्र
2) रजनी = रात
3) किंवारे = दरवाजे
4) मथत= बिलोना
5) सुनियत = सुनाई देते है
6) गउवन= गायें
7) तारै= उद्धार करना

अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

(1) मीरा किसकी दीवानी थी?

उत्तर- मीरा श्रीकृष्ण की दीवानी थी।

(2) गोपियाँ दही क्यों बिलो रही थीं?

उत्तर- गोपियाँ दही बिलोकर मक्खन निकालना चाह रही थीं।

(3) ग्वाल-बालों के हाथ में क्या वस्तु थी?

उत्तर- ग्वाल-बालों के हाथ में माखन-रोटी थी।

(4) कैसी बूंदें पड़ रही थीं?

उत्तर- नन्हीं-नन्हीं बूंदे पड़ रही थीं।

(5) मीरा को सावन मन भावन क्यों लगने लगा?

उत्तर- मीरा को सावन मन भावन लगने लगा, क्योंकि सावन के आते ही उसे श्रीकृष्ण के आने की भनक हो गई ।

लघु उत्तरीय प्रश्न

(1) माता यशोदा अपने कृष्ण को किस प्रकार और क्या कहकर जगा रही है?

उत्तर- माता यशोदा अपने ललना श्रीकृष्ण को तरह-तरह के संकेत देकर जगाती है। वह अपने पुत्र से कहती है कि हे वंशीवाले प्यारे कन्हा! जागो रात बीत चुकी है। सुबह हो गई है। घरों के दरवाजे खुल गए हैं। गोपियाँ दही बिलो रही हैं। ग्वाल बाल द्वार पर खड़े होकर तुम्हारी जयकार कर रहे हैं। यानी वे गायों को लेकर जाने की तैयारी में हैं।

(2) मीरा ने सावन का वर्णन किस प्रकार किया है?

उत्तर- कविता के दूसरे पद में मीरा ने सावन का वर्णन अनुपम ढंग से किया है। वे कहती हैं कि सावन के महीने में मन-भावन वर्षा हो रही है। सावन के आते ही मन में उमंग आ जाती है। उसे श्रीकृष्ण के आने की भनक लग जाती है। चारों ओर से बादल उमड़-घुमड़ कर आ रहे हैं, बिजली चमक रही है, नन्हीं-नन्हीं बूंदें पड़ रही हैं तथा मंद-मंद शीतल वायु चल रही है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

(1) पाठ के आधार पर सावन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर- सावन के महीने में बादल चारों तरफ़ उमड़-घुमड़कर आते हैं। बिजली अपनी छटा बिखेरती है। बारिश ज़ोरों की होने लगती है। नन्हीं-नन्हीं बूंदे बरसने लगती हैं और ठंडी-शीतल हवा बहने लगती है।

व्याकरण

विरामचिह्न-

'विराम' -का अर्थ है 'रुकना। अपने भावों तथा विचारों को सही रूप तथा सही ढंग से संप्रेषित करने के लिए विरामचिहनों का ज्ञान -होना जरूरी है। हिंदी भाषा में अपने भावों तथा विचारों को लिखते अथवा बोलते समय अपनी बात पर बल देने के लिए कुछ चिह्न निर्धारित किए गए हैं, ये चिह्न ही विरामचिह्न कहलाते हैं।-

भाषा के लिखित रूप में विराम देने अथवा रुकने के लिए जिन संकेत चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विरामचिह्न कहते हैं।-

हिंदी में प्रयोग किए जाने वाले कुछ प्रमुख चिह्न हैं

(1)पूर्ण विराम)|) –पूर्ण विराम का अर्थ है पूरी तरह रुकना। वाक्य पूरा होने पर अंत में पूर्ण विराम लगाया-जाता है;

(2)अल्प विराम),) – अल्प विराम का अर्थ हैथोड़ा विराम। वाक्य बोलते समय जब हम थोड़ा रुकते हैं-, तब अल्प विराम का प्रयोग किया जाता है|

जैसेनंदन वन में शेर-, हाथी, हिरन, भेड़िया, बकरी तथा भालू सभी मिलकर रहते हैं।

(3)प्रश्नसूचक चिह्न)?) –इसका प्रयोग प्रश्नसूचक वाक्य के अंत में होता है|

जैसेतुम कहाँ जा रहे हो-? वह कौन है?

(4)अर्ध विराम);) –वाक्य लिखते या बोलते समय, एक बड़े वाक्य में एक से अधिक छोटे वाक्यों को जोड़ने के लिए अर्ध विराम का प्रयोग किया जाता है|

जैसे कपास से सूत तैयार किया जाता है-; सूत से कपड़ा बनता है।

(5)विस्मयादिबोधक चिह्न – (!) मन के भाव यानी हर्ष शोक (खुशी), भय, आश्चर्य, घृणा आदि को प्रकट करने

वाले वाक्यों में विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग किया जाता है|
जैसे)-i) छि) यहाँ कितनी गंदगी है। !ii) वाहकितनी सुंदर जगह है। !
(6)योजक चिह्न – (-) तुलना करने वाले शब्दों तथा शब्दयुग्मों के साथ योजक चिह्न का प्रयोग किया जाता है-|
जैसेमाता पिता– , लड़कालड़की-, रातदिन आदि।-
(7)लाघव चिह्न – (०) किसी शब्द का संक्षिप्त रूप लिखने के लिए लाघव के चिह्न का प्रयोग किया जाता है|
जैसेराजेंद्र प्रसाद ०डॉ-, पं० जवाहर लाल नेहरू।।
(8)उद्धरण चिह्न(" ") (' ')-- इस चिह्न का प्रयोग किसी अक्षर, शब्द, किताबवस्तु या व्यक्ति का नाम-लिखने के लिए किया जाता हैं|
जैसेमहान कवि थे। 'दिनकर' रामधारी सिंह-
(9)कोष्ठक – ()किसी कठिन शब्द का अर्थ लिखने के लिए, किसी बात को स्पष्ट करने के लिए कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त अंक लिखने के लिए भी कोष्ठक प्रयुक्त होते हैं।
(10)अपूर्ण विराम– (:) चिह्न- जहाँ वाक्य पूरा नहीं होता, बल्कि किसी वस्तु अथवा विषय के बारे में बताया जाता है, वहाँ अपूर्ण विरामका प्रयोग किया जाता है .चिह्न-|
जैसे कृष्ण के अनेक नाम हैंमोहन-, गोपाल, गिरिधर आदि।
(11)हंस पद – (‸) लिखते समय यदि कोई अंश छूट जाए तो यह चिह्न लगाकर उस अंश को ऊपर लिख देते हैं; अर्जुन एक कुशल धनुर्धर थे।

लेखन-विभाग

अपने क्षेत्र में बढ़ते अपराधों की समस्या के बारे में सूचना देते हुए थानाध्यक्ष को पत्र लिखिए।
16 ए हौज खास, नई दिल्ली
दिनांक 25 जुलाई ....
सेवा में
थाना अध्यक्ष
हौज खास
विषय – बढ़ते हुए अपराधों की समस्या के समाधान हेतु पत्र।
मान्यवर

मैं हौज खास क्षेत्र में लगातार बढ़ रहे अपराधों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ। पिछले दो महीने में हमारे क्षेत्र में चार चोरियाँ व दो हत्याएँ हो चुकी हैं। छोटी-मोटी राहजनी की घटनाएँ तो अब आम हो गई हैं। राह चलती महिलाओं के पर्स, चेन आदि मोटरसाइकिल सवार दिन-दहाड़े लूटकर ले जाते हैं। पुलिस की गश्त करने वाली वैन सड़क पर दूर-दूर तक दिखाई नहीं देती। सिपाही गश्त पर नहीं आते। इस वजह से अपराधियों के हौंसले दिन-प्रतिदिन बढ़ते ही जा रहे हैं।
अतः आपसे अनुरोध है कि इन अपराधों की रोकथाम के लिए जल्द से जल्द कार्यवाही करें, ताकि इस क्षेत्र के निवासी निश्चित होकर जी सकें और सड़कों पर चल सकें। आशा है कि आप मेरे अनुरोध पर ध्यान देंगे और कोई ठोस कदम उठाएँगे।
धन्यवाद
भवदीय
रजत कुमार

- **गतिविधि- मीराबाई का चित्र बनाए |**

पांडवो और कौरवों के सेनापति

प्रश्न-1 कर्ण की मृत्यु कब हुई?

उत्तर – सत्रहवें दिन की लड़ाई में कर्ण की मृत्यु हो गई।

प्रश्न-2 द्रोणाचार्य के बाद किसे सेनापति बनाया गया?

उत्तर- द्रोणाचार्य के बाद कर्ण को सेनापति बनाया गया।

प्रश्न-3 महाभारत का युद्ध कुल कितने दिन तक चला?

उत्तर- महाभारत का युद्ध कुल अट्ठारह दिन तक चला।

प्रश्न-4 भीष्म के नेतृत्व में कौरव-वीरों ने कितने दिन तक युद्ध किया?

उत्तर - भीष्म के नेतृत्व में कौरव-वीरों ने दस दिन तक युद्ध किया।

प्रश्न-5 कर्ण की मृत्यु के बाद किसने सेनापति बनकर सेना का संचालन किया?

उत्तर- कर्ण की मृत्यु के बाद शल्य ने कौरवों का सेनापति बनकर सेना का संचालन किया।

प्रश्न-6 अर्जुन के भ्रम को दूर करने के लिए श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र में क्या किया?

उत्तर– अर्जुन के भ्रम को दूर करने के लिए श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र में कर्मयोग का उपदेश दिया।

प्रश्न-7 भीष्म कब आहत हुए और उनके बाद सेनापति किसे नियुक्त किया गया?

उत्तर- दस दिन के युद्ध के बाद भीष्म आहत हुए और उनके बाद द्रोणाचार्य को सेनापति नियुक्त किया गया।

प्रश्न-8 युधिष्ठिर युद्ध शुरू होने के पहले क्यों अपने रथ से उतरे?

उत्तर – युधिष्ठिर युद्ध शुरू होने के पहले अपने रथ से बड़ो की आज्ञा लेने के लिए उतरे क्योंकि बिना बड़ों की आज्ञा लिए युद्ध करना अनुचित माना जाता है।

प्रश्न-9 कौरवों की सेना के नायक कौन थे?

उत्तर - कौरवों की सेना के नायक भीष्म पितामह थे ।

प्रश्न-10 किसे पांडवों की सेना का नायक बनाया गया?

उत्तर – वीर कुमार धृष्टद्‌युम्न को पांडवों की सेना का नायक बनाया गया।

प्रश्न-11 रुक्मी के अपमानित होने का कारण क्या था?

उत्तर - रुक्मी कर्तव्य से प्रेरित होकर नहीं, बल्कि अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के उद्देश्य से कुरुक्षेत्र गया और अपमानित हुआ।

प्रश्न-12 युद्ध के समय कौन-कौन से राजा युद्ध में सम्मिलित नहीं हुए और तटस्थ रहे?

उत्तर- युद्ध के समय सारे भारतवर्ष में दो ही राजा युद्ध में सम्मिलित नहीं हुए और तटस्थ रहे एक बलराम और दूसरे भोजकट के राजा रुक्मी।

पहला, दूसरा और तीसरा दिन

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न-1 कौरव-सेना में कौन से वीर अर्जुन का मुकाबला कर सकते थे?

उत्तर - सारी कौरव-सेना में तीन ही ऐसे वीर थे, जो अर्जुन का मुकाबला कर सकते थे- भीष्म, द्रोण और कर्ण।

प्रश्न-2 युद्ध के समय पांडवों और कौरवों की सेना के अग्रभाग में कौन रहा करते थे?

उत्तर - कौरवों की सेना के अग्रभाग पर प्रायः दुःशासन ही रहा करता था और पांडवों की सेना के आगे भीमसेन।

प्रश्न-3 पहले दिन की लड़ाई में हुई दुर्गति से पांडवों ने क्या सबक लिया?

उत्तर- पहले दिन की लड़ाई में पांडव-सेना की जो दुर्गति हुई थी, उससे सबक लेकर पांडव-
सेना के नायक धृष्टद्‌युम्न ने दूसरे दिन बड़ी सतर्कता के साथ व्यूह-रचना की और सैनिकों का साहस बँधाया।

प्रश्न-4 आप कैसे कह सकते हैं कि इस युद्ध में संबंधो का कोई मूल्य नहीं रह गया था?

उत्तर – बाप ने बेटे को मारा। बेटे ने पिता के प्राण लिए। भानजे ने मामा का वध किया। मामा ने भानजे का काम तमाम किया। युद्ध का यह दृश्य पुष्टि करता है कि इस युद्ध में संबंधो का कोई मूल्य नहीं रह गया था।

प्रश्न-5 पहले दिन की लड़ाई में पांडवों की क्या स्तिथि रही?

उत्तर- पहले दिन की लड़ाई में भीष्म ने पांडवों पर ऐसा हमला किया कि पांडव-
सेना थर्रा उठी। युधिष्ठिर के मन में भय छा गया। दुर्योधन आनंद के कारण झूमता हुआ दिखाई दिया। पांडव घबराहट के मारे श्रीकृष्ण के पास गए। श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर और पांडव-सेना का धीरज बँधाया।

चौथा, पाँचवाँ और छठा दिन /
प्रश्न / उत्तर
प्रश्न-1 घटोत्कच कौन था?
उत्तर – घटोत्कच भीम का पुत्र था।
प्रश्न-2 चौथे दिन के युद्ध में दुर्योधन के कितने भाई मारे गए?
उत्तर - चौथे दिन के युद्ध में दुर्योधन के आठ भाई मारे गए।
प्रश्न-3 घटोत्कच के क्रोध का क्या कारण था?
उत्तर- अपने पिता को मूर्च्छित देखकर घटोत्कच को क्रोध आ गया।
प्रश्न-4 धृतराष्ट्र को कुरुक्षेत्र के मैदान का आँखों देखा हाल कौन सुनाता था?
उत्तर – संजय कुरुक्षेत्र के मैदान का आँखों देखा हाल धृतराष्ट्र को सुनाता था।
प्रश्न-5 युद्ध के पाँचवें दिन क्या हुआ?
उत्तर - युद्ध के पाँचवें दिन संध्या होते-होते अर्जुन ने हजारों कौरव-सैनिकों का जीवन समाप्त कर दिया।
प्रश्न-6 दुर्योधन के भीषण अस्त्र का भीमसेन पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – दुर्योधन ने निशाना साधकर भीमसेन की छाती पर एक भीषण अस्त्र चलाया जिसके कारण भीम चोट खाकर मूर्च्छित-सा होकर रथ पर बैठ गया।

पाठ- 17 वीर कुँवर सिंह

- **पाठ का सार**

इस निबंध में वीर कुँवर सिंह के जीवन और स्वाधीनता संग्राम में उनकी अहम भूमिका के बारे में लिखा गया है। वीर कुँवर सिंह जगदीशपुर की एक रियासत के जमींदार थे। बचपन से ही पढ़ाई को छोड़कर उन्हे घुड़सवारी, तलवारबाजी और कुश्ती में अधिक मजा आता था। अपने पिता की मृत्यु के बाद कुँवर सिंह ने रियासत की बागडोर अपने हाथों में ले ली। तभी से उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ मुहिम चलाना शुरु किया था। जब 1857 का स्वाधीनता संग्राम हुआ तो कुँवर सिंह भी उस लड़ाई में कूद पड़े। कुँवर सिंह ने बिहार और उत्तर प्रदेश के कई राजाओं के साथ गठबंधन तैयार किया ताकि अंग्रेजों को कड़ी टक्कर दे सकें। उन्होंने आजमगढ़ पर विजय प्राप्त की। कुँवर सिंह ने अंत में जगदीशपुर पर कब्जा कर लिया लेकिन उसके कुछ

दिनों बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। कुँवर सिंह की बहादुरी के किस्से मशहूर हैं, क्योंकि अपनी अधिकतर लड़ाइयाँ उन्होंने लगभग अस्सी वर्ष की अवस्था में लड़ी। कुँवर सिंह ने सांप्रदायिक सद्भाव की दिशा में कई महत्वपूर्ण कार्य किये थे। कुँवर सिंह ने जनता की भलाई के लिए कई काम किये थे, जैसे सड़कें बनवाना, जलाशय खुदवाना, आदि।

➢ नए शब्द

1) अभिराम	2) निर्मित
3) उलझन	4) स्वधिनता
5) सक्रिय	6) सर्वत्र
7) कीर्ति	8) प्रशिस्त
9) शौर्य	10) अरदिल

➢शब्दार्थ

1) अभिराम= सुंदर	2) व्यापक= फैला हुआ
3) दमन= कुचलना	4) निर्मित= बना हुआ
5) उलझन= कठिनाई	6) लोहा लेना = मुक़ाबला करना
7) स्वधिनता = आज़ादी	8) सर्वत्र= हर जगह
9) पतन= विनाश	10) भावी= आनेवाला
11) प्रस्थान करना= जाना	12) जलाशय= तालाब
13) अरदिल= शत्रुओं का समह	

➢ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

1) वीरकुंवर सिंह का जन्म कब औरकहाँहुआथा?
उत्तर- वीरकुंवर सिंह काजन्म 1782 ई० में बिहार में शाहाबाद जिले के जगदीशपुर में हुआ था।
2) बाबूकुँवरसिंह ने रियासत की जिम्मेदारी कब सँभाली?
उत्तर- बाबूकुँवरसिंहने अपने पिता की मृत्युके बाद 1827 में रियासत की जिम्मेदारी सँभाली।
3) कुँवरसिंह किस उद्देश्य से आज़मगढ़ परअधिकार किया था?
उत्तर- वीरकुंवरसिंह आजमगढ़ पर अधिकार कर इलाहाबाद और बनारस पर आधिपत्य स्थापित करना चाहते थे, वहाँ अंग्रेजों को पराजित कर अंततः उनका लक्ष्य जगदीशपुर पर अधिकार करना था।
4) सुभद्राकुमारी चौहान की कविता 'झाँसीकीरानी' में किन-किन स्वतंत्रता सेनानियों के नाम आए हैं?
उत्तर- झाँसी कीरानी' कविता में रानी लक्ष्मीबाई केअलावे नाना धुंधूपंत, तात्याटोपे, अज़ीमुल्लाखान, अहमद शाह मौलवी तथा वीरकुंवरसिंह के नाम आए हैं।
5) सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत कब और किसने की?
उत्तर- सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत मंगलपांडे ने मार्च 1857 में बैरक पुर सैनिक छावनी से की थी।

➢ लघुउत्तरीयप्रश्न

1) 1857 की क्रांति की क्या उपलब्धियाँ थीं?
उत्तर- 1857 की क्रांति की सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि यह आंदोलन देश को आजादी पाने की दिशा में एक प्रथम चरण था। इस क्रांति के परिणाम स्वरूप लोगों की आँखें खुल गईं और उनमें राष्ट्रीय एकता और स्वाधीनता की पृष्ठभूमि का विकास हुआ। इसआंदोलन की उपलब्धि सांप्रदायिक सौहार्द की भावना के विकास के रूप में हुआ। हिंदू-मुस्लिम एकता बढ़ी। राष्ट्रीय भावना लोगों में जाग्रत हुई।
2) मंगलपांडे के बलिदान के बाद स्वतंत्रता सेनानियों ने क्रांति को कैसे आगे बढ़ाया?
उत्तर- मंगलपांडे के बलिदान के बाद मे रठ केआस-पास के स्वतंत्रता सेनानियों ने क्रांति को आगे बढ़ाया और दिल्ली पर विजय प्राप्त की। 14 मई को दिल्ली पर अधिकार करने के बाद उन्होंने बहादुरशाह ज़फ़र को अपना सम्राट घोषित किया।
3) आज़मगढ़ की ओर जाने का वीरकुंवरसिंह का क्या उद्देश्य था?
उत्तर- वीरकुंवरसिंह का आजमगढ़ जाने का उद्देश्य था, इलाहाबाद तथा बनारस पर आक्रमण कर शत्रुओं को पराजित करना। उस पर अपना अधिकार जमाना। अंततः उन्होंने इन पर अधिकार करने के बाद जगदीश पर भी कब्जा जमा लिया।

उन्होंने अंग्रेजों को दोबार हराया। उन्होंने 22 मार्च 1858 को आजमगढ़ परभीअधिकार कर वे 23 अप्रैल 1858 को स्वाधीनता की विजय-पताकाफहरातेहुएजगदीशपुरतकपहुंचगए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1) 1857 के आंदोलन में वीरकुंवर सिंह के योगदानों का वर्णन करें।

उत्तर- वीरकुंवरसिंह का 1857 केआंदोलन मेंनिम्नलिखित योगदान है कुँवरसिंह वीर सेनानी थे। 1857 के विद्रोह में उन्होंने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया व अंग्रेजों को कदम-कदम पर परास्त किया। कुंवरसिंह की वीरता पूरे भारत द्वारा भुलाई नहीं जा सकती।आरा पर विजय प्राप्त करने पर इन्हें फौजी सलामी भी दी गई। इसकेअलावेइन्होंनेबनारस, मथुरा, कानपुर, लखनऊआदि स्थानों पर जाकर विद्रोह की सक्रिय योजनाएँ बनाईं। उन्होंने विद्रोह का सफल नेतृत्व करते हुए दानापुरऔर आरा पर विजय प्राप्त की। जगदीशपुर में पराजित होने के बावजूद सासाराम सेमिर्जापुर, रीवा, कालपी होते हुए कानपुर पहुँचे। उनकी वीरता की ख्याति दूर-दूर स्थान में पहुँच गई। उन्होंने आज़मगढ़ पर अधिकार करने के बाद अपनी मातृभूमि जगदीशपुर पर पुनःआधिपत्य जमा लिया। इसप्रकार उन्होंने मरते दमतक अपनी अमिट छाप पूरे देश पर छोड़ा।

व्याकरण

- **वाक्यविचार--**

मनुष्य अपने भावों या विचारों को वाक्य में ही प्रकट करता है। वाक्य सार्थक शब्दों के व्यवस्थित और क्रमबद्ध समूह से बनते हैं, जो किसी विचार को पूर्ण रूप से प्रकट करते हैं।अर्थ प्रकट करने वाले सार्थक शब्दों के व्यवस्थित समूह को वाक्य कहते हैं|

जैसे-ओजस्व कमरे में टी.वी. देख रहा है।

वाक्य के अंग – वाक्य के दो अंग होते हैं।

- उद्देश्य
- विधेय

1. उद्देश्य – वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं; जैसे

- राजा खाता है।
- पक्षी डाल पर बैठा है।

इन वाक्यों में राजा और पक्षी उद्देश्य हैं।

2. विधेय – उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए, उसे विधेय कहते हैं; जैसे

- राजा खाता है।
- पक्षी डाल पर बैठा है।

इन वाक्यों में खाता है, और डाल पर बैठा है, विधेय है।

वाक्य के भेद

वाक्य के निम्नलिखित दो भेद होते हैं।

- रचना के आधार पर
- अर्थ के आधार पर

1. रचना के आधार पर वाक्य के भेद

रचना के अनुसार वाक्य के तीन प्रकार होते हैं

- सरल वाक्य
- संयुक्त वाक्य
- मिश्रित वाक्य

(i) सरल वाक्य – जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहते हैं; जैसे

- अंशु पढ़ रही है।

- पिता जी अखबार पढ़ रहे हैं।

(ii) संयुक्त वाक्य – जिस वाक्य में दो या दो से अधिक स्वतंत्र वाक्य समुच्चयबोधक शब्द से जुड़े रहते हैं, वह संयुक्त वाक्य कहलाता है; जैसे

- नेहा गा रही है और अंशु नाच रही है।
  उपर्युक्त वाक्य में दो सरल वाक्य और से जुड़े हुए हैं और समुच्चयबोधक हटाने पर ये स्वतंत्र वाक्य बन जाते हैं।

(iii) मिश्रवाक्य – जिस वाक्य में एक प्रधान वाक्य होता है और अन्य वाक्य उस पर आश्रित या गौण होते हैं, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं; जैसे

- जो कल घर आया था, वह बाहर खड़ा है।
- कोमल विद्यालय नहीं जा सकी, क्योंकि वह बीमार है।
  उपर्युक्त पहले और दूसरे वाक्य में जो कल घर आया था तथा कोमल विद्यालये नहीं जा सकी प्रधान उपवाक्य हैं, जो क्रमशः वह बाहर खड़ा है तथा क्योंकि वह बीमार है, आश्रित उपवाक्यों से जुड़े हैं। अतः ये मिश्र वाक्य हैं।

2. अर्थ के आधार पर वाक्य के भेद

अर्थ के अनुसार वाक्य आठ प्रकार के होते हैं

1. विधानवाचक
2. निषेधवाचक
3. इच्छावाचक
4. प्रश्नवाचक
5. आज्ञावाचक
6. संकेतवाचक
7. विस्मयसूचक
8. संदेहवाचक

1. विधानवाचक – जिस वाक्य में किसी बात का होना या करना पाया जाए, वह विधानवाचक वाक्य कहलाता है; जैसे

- वह मेरा मित्र है।
- अंशु अपना कार्य करती है।

2. 'निषेधवाचक वाक्य-जिस वाक्य में किसी बात या काम के न होने का बोध हो , वह निषेधात्मक वाक्य कहलाता है; जैसे-

- उसने खाना नहीं खाया।

3. प्रश्नवाचक वाक्य-जिसे वाक्य का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाए, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे

- आप कहाँ रहते हैं?
- तुम क्या पढ़ रहे हो?

4. आज्ञावाचक वाक्य-जिस वाक्य से आज्ञा तथा उपदेश को बोध होता है, वह आज्ञावाचक वाक्य कहलाता है, जैसे

- तुम यहाँ से चले जाओ।
- अपना कमरा साफ़ करो।

5. विस्मयादिवाचक वाक्य-जिस वाक्य के द्वारा शोक, हर्ष, आश्चर्य आदि के भाव प्रकट होते हैं, वह विस्मयादिवाचक वाक्य कहलाता है; जैसे

- वाह! क्या दृश्य है।
- अरे! यह क्या कर डाला।

6. संदेहवाचक वाक्य-जिस वाक्य में किसी कार्य के होने के बारे में संदेह प्रकट किया जाता है, उसे संदेहवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे

- वह शायद ही यह काम करे
- वह जयपुर चला गया होगा।

7. इच्छावाचक वाक्य-जिस वाक्य से किसी आशीर्वाद, कामना, इच्छा आदि का बोध हो, उसे इच्छावाचक वाक्य कहते हैं; जैसे

- ईश्वर तुम्हें दीर्घायु बनाए।
- जुग-जुग जियो।

8. संकेतवाचक वाक्य-जिस वाक्य में संकेत या शर्त हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं। जैसे

- यदि वर्षा होती तो फ़सल अच्छी होती।
- वर्षा हुई तो गरमी कम हो जाएगी।

- **लेखन-विभाग**

1)साक्षरता के विषय पर छात्र और अध्यापक के बीच संवादलेखन

अध्यापक :आज मैं आप सबको साक्षरता के बारे में बताता हूँ, साक्षरता हम सबके जीवन में बहुत जरूरीहै|

छात्र:साक्षरता काअर्थ विस्तार से बताए?

अध्यापक :साक्षरता काअर्थ होता है , शिक्षित होना , पढ़ाई करना , स्कूल जाना | साक्षर होने से हमें सबके बारे में जानकारी होती है, और हम आज़ादी से जी सकते है |

छात्र:शिक्षा हमारे लिए बहुत जरूरी है |

अध्यापक :सही कह रहे हो शिक्षा हमारे लिए बहुत जरूरी है , बिना शिक्षा के हमारा जीवन व्यर्थ है |

छात्र:कई जगह पर तो अभी भी लोग बच्चों को शिक्षा के लिए नहीं भेजते|

अध्यापक :सभी जोउजागर करने ले लिए सरकार ने साक्षरता अभियान पर विज्ञापन चलाया है ताकी सभी को घर-घर तक पताचले सबपढ़े,औरआगेबढ़ेऔरउन्नतिकरें

छात्र:शिक्षा लेने का हक सबको है , हम किसी भी उम्र में सिख सकते है |

अध्यापक:बौद्धिक विकास के लिए भी पूर्णरूप से शिक्षित होना बहुत आवश्यक है। कुछ पढ़ना हो लिखना हो , किसी को समझना हो , दूसरे देश जाना हो , बहार जाना इसके लिए हमें शिक्षित होना बहुत जरूरीहै |

छात्र:आपने बहुत अच्छा समझा या हम सब याद रखेंगे |

अध्यापक :मन लगाकर पढ़ाई करो और अपने लक्ष्य को प्राप्त करो |

बाल रामायण

सातवाँ, आठवाँ और नवाँ दिन

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न-1 कुमार शंख की मृत्यु कब हुई?
उत्तर – सांतवें दिन के युद्ध में कुमार शंख की मृत्यु कब हुई।
प्रश्न-2 आठवें दिन के युद्ध में भीमसेन ने धृतराष्ट्र के कितने बेटों का वध किया?
उत्तर – आठवें दिन के युद्ध में भीमसेन ने धृतराष्ट्र के आठ बेटों का वध किया।
प्रश्न-3 आठवें दिन के युद्ध में अर्जुन क्यों शोक-विह्वल हो उठा?
उत्तर- आठवें दिन के युद्ध में एक ऐसी घटना हुई कि जिससे अर्जुन शोक-
विह्वल हो उठा। उसका लाड़ला, साहसी और वीर बेटा इरावान, जो एक नागकन्या से पैदा हुआ था, उस दिन उसका वध हो गया।
प्रश्न-4 इरावान की मृत्यु का भीमसेन के पुत्र घटोत्कच पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर -
भीमसेन के पुत्र घटोत्कच ने जब देखा कि इरावान मारा गया, तो उसने इतने जोर से गर्जना की कि जिससे सारी सेना थर्रा उठी। उसके बाद वह कौरव-सेना पर टूट पड़ा और घोर प्रलय मचाने लगा।

अभिमन्यु

प्रश्न / उत्तर

प्रश्न-1 द्रोणाचार्य द्वारा बनाया गया चक्रव्यूह किसने तोड़ा?
उत्तर – द्रोणाचार्य द्वारा बनाया गया चक्रव्यूह अभिमन्यु ने तोड़ा।
प्रश्न-2 तेरहवें दिन अर्जुन को युद्ध के लिए किसने ललकारा?
उत्तर- तेरहवें दिन संशप्तकों (त्रिगर्ता) ने अर्जुन को युद्ध के लिए ललकारा।
प्रश्न-3 तेरहवें दिन अर्जुन लड़ता हुआ किस दिशा की ओर चले गए?
उत्तर – तेरहवें दिन अर्जुन लड़ता हुआ दक्षिण दिशा की ओर चले गए।
प्रश्न-4 द्रोण ने कर्ण को अभिमन्यु पर हमला करने का कौन सा उपाय बताया?
उत्तर – द्रोण ने कर्ण के पास आकर कहा-
"इसका कवच भेदा नहीं जा सकता। ठीक से निशाना साधकर इसके रथ के घोड़ों की रास काट डालो और पीछे की ओर से इस पर अस्त्र चलाओ।"
प्रश्न-5 अभिमन्यु ने युधिष्ठिर से चक्रव्यूह भेदने के बारे में क्या कहा?
उत्तर - अभिमन्यु ने युधिष्ठिर से कहा-"महाराज, इस चक्रव्यूह में प्रवेश करना तो मुझे आता है, पर प्रवेश करने के बाद कहीं कोई संकट आ गया तो व्यूह से बाहर निकलना मुझे याद नहीं है।"
प्रश्न-6 दुर्योधन के पुत्र लक्ष्मण की मृत्यु कैसे हुई?
उत्तर – अभिमन्यु की बाण-वर्षा से व्याकुल होकर जब सभी योद्धा पीछे हटने लगे, तो वीर लक्ष्मण अकेला जाकर अभिमन्यु से भिड़ गया। वह वीर बालक भाले की चोट से तत्काल मृत होकर गिर पड़ा।
प्रश्न-7 युधिष्ठिर ने अभिमन्यु को किस प्रकार मदद करने का विश्वास दिलाया?
उत्तर – युधिष्ठिर ने कहा-"बेटा! व्यूह को तोड़कर एक बार तुम भीतर प्रवेश कर लो; फिर तो जिधर से तुम आगे बढ़ोगे, उधर से ही हम तुम्हारे पीछे-पीछे चले आएँगे और तुम्हारी मदद को तैयार रहेंगे।"
प्रश्न-8 जयद्रथ की रक्षा के लिए किन्हें नियुक्त किया गया?
उत्तर - जयद्रथ के रक्षा के लिए भूरिश्रवा, कर्ण, अश्वत्थामा, शल्य, वृषसेन आदि महारथियों को नियुक्त किया गया।
प्रश्न-9 अभिमन्यु की मृत्यु के बाद अर्जुन ने क्या प्रतिज्ञा ली?
उत्तर अभिमन्यु की मृत्यु के बाद अर्जुन ने प्रतिज्ञा ली कि "जिसके कारण मेरे प्रिय पुत्र की मृत्यु हुई है, उस जयद्रथ का मैं कल सूर्यास्त होने से पहले वध करके रहूँगा।"
प्रश्न-10 श्रीकृष्ण पर किसने प्रहार किया और उसका क्या परिणाम हुआ?
उत्तर – श्रुतायुध ने गदा उठाकर श्रीकृष्ण पर प्रहार किया। परंतु नि:शस्त्र और युद्ध में शरीक न होनेवाले श्रीकृष्ण पर फेंककर मारी गई गदा श्रुतायुध को ही जा लगी और वह मृत होकर गिर पड़ा।

युधिष्ठिर की चिंता और कामना
प्रश्न / उत्तर
प्रश्न-1 भीम के सिंहनाद का क्या असर हुआ?
उत्तर अर्जुन को सुरक्षित देखते ही भीमसेन ने सिंहनाद किया। भीम का सिंहनाद सुनकर श्रीकृष्ण और अर्जुन आनंद के मारे उछल पड़े और उन्होंने भी जोरों से सिंहनाद किया। इन सिंहनादों को सुनकर युधिष्ठिर बहुत ही प्रसन्न हुए। उनके मन से शोक के बादल हट गए।
प्रश्न-2 दुर्योधन मैदान छोड़कर क्यों भाग खड़ा हुआ और इस पर द्रोण ने उसे क्या समझाया?
उत्तर जिस स्थान पर अर्जुन और जयद्रथ का युद्ध हो रहा था, दुर्योधन भी वहाँ आ पहुँचा मगर थोड़ी ही देर में बुरी तरह हारकर मैदान छोड़कर भाग खड़ा हुआ। इस पर द्रोण ने दुर्योधन से कहा-
"बेटा दुर्योधन, तुम्हें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए। तुम जयद्रथ की सहायता के लिए जाओ और वहाँ जो कुछ करना आवश्यक हो, वह करो।"
प्रश्न-3 युधिष्ठिर ने सात्यकि के प्रसंग में धृष्टद्युम्न से क्या कहा?
उत्तर- युधिष्ठिर धृष्टद्युम्न से बोले–"द्रुपद-कुमार! आपको अभी जाकर द्रोणाचार्य पर आक्रमण करना चाहिए, नहीं तो डर है कि कहीं आचार्य के हाथों सात्यकि का वध न हो जाए।"
प्रश्न-4 धृष्टद्युम्न ने भीमसेन को क्या विश्वास दिलाया?
उत्तर - धृष्टद्युम्न ने कहा-"तुम किसी प्रकार का चिंता न करो और निश्चित होकर जाओ। विश्वास रखो कि द्रोण मेरा वध किए बिना युधिष्ठिर को नहीं पकड़ सकेंगे।"

>>>